पाठ 7. कर्तव्यनिष्ठा

पाठ का परिचय

ज़फर मियाँ एक दिलचस्प आदमी हैं। लेखक जब भी उनके सैलून पर जाते हैं तो वे उनका बड़ा सम्मान करते हैं। एक बार जब लेखक उनकी दुकान पर पहुँचे तो ज़फर मियाँ ने उनका स्वागत किया और फिर किसी की हजामत बनाने लगे। जब वे हजामत से निबटे तो लेखक को लगा कि अब उनका नंबर होगा, लेकिन ज़फर मियाँ ने उन्हें न बुलाकर पास ही बैठे मज़दूर को बुला लिया और उसके बाल काटने लगे। लेखक लगातार उन्हें देखे जा रहे थे। वे उस मज़दूर की हजामत भी पूरी लगन के साथ बना रहे थे। लेखक को यह देख बहुत अच्छा लग रहा था। उन्होंने मज़दूर को कलेक्टर की उपमा देते हुए ज़फर मियाँ को ताना मारा तो ज़फर मियाँ ने उनसे कहा कि इस कुर्सी पर आकर बैठने वाला हर व्यक्ति मेरे लिए कलक्टर से कम नहीं। यह उत्तर सुनकर लेखक को बहुत अच्छा लगा। श्रम के प्रति यह श्रद्धा और पेशे के प्रति इस ईमानदारी की आज हम सभी को आवश्यकता है।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

हर एक नागरिक में अपने काम के लिए एक चाव, श्रम के प्रति यह श्रद्धा और पेशे के प्रति ईमानदारी के इस भाव का जागरण ही राष्ट्र की जीवन-शक्ति का सर्वोत्तम मापदंड है।

पाठ का वाचन

बच्चों से एक-एक अनुच्छेद का वाचन करने को कहें। कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। आवश्यक पंक्तियों का आशय स्पष्ट करें। अंत में पूरी कहानी का सार स्पष्ट करें।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा बच्चों से करें –

- जीवन में कौन सफलता की सीढ़ी चढ़ता है?
- मनुष्य का स्तर कर्म के आधार पर किस प्रकार निर्धारित किया जा सकता है?
- श्रम के प्रति श्रद्धा किस प्रकार प्रकट की जा सकती है?
- कर्म को जीवन-शक्ति का सर्वोत्तम मापदंड क्यों कहा गया है?
- कर्मशील व्यक्ति श्रेष्ठ क्यों माना गया है?